Result Mitra Daily magazine

अशोक मंडप एवं गणतंत्र मंडप

❖ हालिया सन्दर्भ :-

- राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने राष्ट्रपति भवन के दो हॉलों का नाम बदल दिया है।
- दरबार हॉल एवं अशोक हॉल का नाम बदलकर क्रमशः गणतंत्र मंडप और अशोक मंडप रखा गया है।
- प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि राष्ट्रपति भवन के माहौल को भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को प्रतिबंधित करने वाला बनाया जा रहा है और इसी क्रम में दरबार और हॉल को "मंडप" से प्रतिस्थापित कर दिया गया है।
- दरबार शब्द भारतीय शासकों एवं अंग्रेजों द्वारा लगाए जाने वाले दरबार को संदर्भित करता था।

❖ राष्ट्रपति भवन का दरबार हॉल :-

- किंग जार्ज पंचम् द्वारा वर्ष 1911 में राजधानी को कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित की जाने की घोषणा की गई, जिसके बाद वर्ष 1929 में राष्ट्रपति भवन का निर्माण कार्य पूरा किया गया।
- इस हॉल में सिविल एवं रक्षा अलंकरण समारोह आयोजित किए जाते हैं, जहां पुरस्कारों का वितरण राष्ट्रपति द्वारा किया जाता है।
- यहां शपथ ग्रहण समारोह भी आयोजित किया जाता है।
- 1947 में स्वतंत्र भारत की पहली सरकार ने इसी हॉल में शपथ लिया था।
- इस वर्ष एनडीए की लगातार तीसरी सरकार का शपथ ग्रहण समारोह भी इसी हॉल में आयोजित किया गया था।
- इसकी दीवारें 42 फीट ऊँची है, जो सफेद संगमरमर से बना है।
- वस्तुतः जब 1857 की क्रांति के बाद मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर को म्यांमार निर्वासित किया गया, उसके बाद से ही ब्रिटिश द्वारा मुगल वास्तुकला को ब्रिटिश वास्तुकला से मिश्रित कर दिया गया ताकि स्वयं को मुगलों के वैध उत्तराधिकारी के रूप में दर्शाया जा सके।
- दिल्ली मे नए-निर्माण की जिम्मेदारी एडविन लुटियंस के पास थी, जिसने पश्चिमी के साथ भारतीय वास्तुकला का भी प्रयोग किया।
- हॉल में पीले जैसलमेर संगमरमर के स्तंभ बने हुए है, जिसका आधार एवं शीर्ष सफेद है।
- हॉल में लगे संगमरमर मकराना, अलवर, मारवाड एवं अजमेर से लाए गए थे, जबकि चॉकलेटी रंग का संगमरमर इटली से आयात किया गया था।

- हॉल में वायसराय एवं उनकी पत्नी के लिए 2 सिंहासन भी स्थापित किए गए थे, जो बाद में राष्ट्रपति की कुर्सी थी।
- स्वतंत्रता के बाद नए प्रतीकों वाला सिंहासन यहां रखा गया है, जिसके पीछे 5वीं शताब्दी की बुद्ध प्रतिमा है।

❖ **अशोक हॉल :**

- यह हॉल मूलतः बॉलरूम (Ballroom) था।
- बॉलरूम मुख्यतः एक बडा हॉल होता है, जो किसी भवन में विशेषतः आतिथ्य-सत्कार के लिए होता है।
- वर्तमान में इस हॉल का प्रयोग विदेशी मिशन प्रमुखों द्वारा प्रमाण-पत्र प्रस्तुत किए जाने एवं राष्ट्रपति द्वारा राजकीय भोज समारोह के लिए किया जाता है।
- महत्वपूर्ण समारोहों के दौरान राष्ट्रगान बजाने के लिए यहां एक मंच जैसी जगह का प्रयोग किया जाता है।
- कमरे में विभिन्न पेंटिंग सजी हुई है, जिसमें फारस के शासक फतह अली शाह द्वारा उपहार स्वरूप दिया गया पेंटिंग भी है।
- वास्तुकला में मिश्रित प्रभाव यहां भी प्रदर्शित होता है।
- यहां निर्मित दो फायरप्लेस विक्टोरियन डिजाइन से प्रेरित है, जिन पर फारसी शिलालेख है।
- फारसी में अंकित शब्दों का शाब्दिक अर्थ है कि – "भगवान जिसने सिंहासन बनाया है, उसकी शक्ति महल भी बना सकती है और इस तरह का खूबसूरत इमारत धरती या आसमान में कहीं नहीं देखी जा सकती है।"